मोहित

नाम में, जिसके है अद्भुत मोहिनी,
कंठ में माँ शारदे का वास है
ज्ञान का सागर , हृदय में , है भरा
वाणी से गूँजे, धरा आकाश है

भरता है नव चेतना, और भक्ति मन में
गूँजता संघोष से धरती गगन है
उल्लास और उत्साह भरती जिसकी वाणी
विघ्नहर्ता का ज्यों होता आगमन है

बाँध लेता है सभी को जो सभा में
उत्सवों में सूर्य सा प्रकाश है
शब्द सिंधु से निकाले सारगर्भित
मोतियों के हार का आभास है

कर प्रशंसा मुक्त कंठों से कला की
बाँटता सबको अति सम्मान है
वृद्ध , नारी, नर, युवा , शिशु , बालिकाएँ,
है बनाता हर हृदय में स्थान है

विविध रंगो को समेटे जब पटल पर
तूलिका संग नृत्य करती उँगलियाँ हैं
करता सृजन, अनमोल रचनाओं का जो,
अप्रतिम, सौंदर्य की फुलवारियाँ हैं

ज्यों समेटे, सिंधु , सरिताएँ कई
पर रहे गंभीर, मर्यादित, अटल
हर विधा, अगणित कलाओं को समेटे
धीर रहता, योगियों सा, वो अचल

तबले पर, जब हैं थिरकती, उँगलियाँ
ताल और लय से करे, संवाद है
श्वास की, गति को मिला, परमात्मा से
मानो अंतर, का वो अनहद, नाद है

प्रेम और आशीष , उसको दे रहे
हों स्वप्न , सब साकार , सबकी कामना है
धन्य हैं पितु-मात , ऐसी संतति को
जन्म देने, में युगों की, साधना है

सप्रेम भेंट

राम दयाल गोयल